International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 4; July 2017; Page No. 46-47

स्त्री संघर्ष की चुनौतियाँ और महदेवी वर्मा

डॉ0 ललित कुमार सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी), महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय वि0वि0 चित्रकूट, सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

स्त्री सदियों से दासता की जंजीर में जकड़ी रही है। उसकी दासता को बनाये रखने के लिए समाज ने तरह–तरह की रुढ़ियों एवं मान्यताओं को बनाया जिससे कि उसकी मुक्ति न हो सके। महादेवी वर्मा ने स्त्री की अस्मिता और स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए आजीवन संघर्ष किया। उनके साहित्य में स्त्री स्वतन्त्रता के लिए बेचैनी स्पष्ट दिखाई देती है। उनकी यह बेचैनी नारी की समस्याओं को दूर करने के लिए सही रास्ता भी दिखाती है। उनका नाम एक स्त्रीवादी चिंतक के रूप में साहित्य जगत में दिखाई देता है। महादेवी वर्मा स्त्री को पुरुष के समान स्वतन्त्रता दिलाना चाहती हैं। उनके अनुसार स्त्री को शिक्षा, सम्पत्ति, आर्थिक स्वावलम्बन का अधिकार पुरुष के समान ही होना चाहिए। महादेवी की संवेदना उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्रियों को प्रेरित किया है कि वह अपने हक के लिए हर संभव आवाज उठाये। उनका कहना है कि अपने हक के लिए चुप्पी तोड़कर स्वयं संघर्ष करना होगा तभी स्वतन्त्रता संभव है।

यह एक विड़म्बना है कि भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति अत्यन्त विरोधाभाषी रही है। एक तरफ उसे शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया तो दूसरी तरफ उसे अबला समझा गया। इन दोनों अतिवादी धारणाओं ने स्त्री के स्वतन्त्र विकास में बाधा पहुंचाई। एक तरफ मनु स्मृति में कहा गया ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।'' वहीं महाभारत में कहा गया ''न स्त्री स्वतंत्र मर्हतिः''।

कहा जाता है कि बुराई जल्दी स्थान ग्रहण कर लेती है, वही हुआ भी। दूसरी उक्ति स्त्री षोषण के लिए एक परम्परा के रूप में फैल गयी और यह परम्परा समाज में इतनी गहराई से बैठी कि आज भी हम किसी न किसी रूप में उसे पाते हैं।

समाजिक आन्दोलनों से स्त्री मुक्ति की संघर्ष यात्रा प्रारम्भ होकर साहित्यिक रचनाओं की ओर उन्मुख हुई। हिन्दी साहित्य में हम मीरा से इसका प्रारम्भ देखते हैं किन्तु मीरा के पश्चात् बहुत वर्षों तक यह आवाज तेज नहीं हो सकी। इस आवाज को बुलन्द करने का श्रेय महादेवी को जाता है।

रचनाकार के व्यक्तित्व निर्माण में तत्कालीन परिस्थितियाँ और उसके जीवन के अनुभवों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। जिस परिवेश और संघर्षों में वह पलता–बढ़ता है उसी की छाया उसकी रचनाओं में दिखाई देती है। महादेवी वर्मा का जन्म गुलाम भारत में हुआ था, उस समय साहित्य लेखन में स्त्रियों की संख्या बहुत कम थी, किन्तु धीरे–धीरे उसमें वृद्धि के संकेत मिलने लगे थे। महादेवी वर्मा ने अपने लेखन के माध्यम से स्त्री संघर्ष को दिशा दी। उनकी स्त्री अपने स्वतन्त्र अस्तित्व के लिए लड़ाई लड़ती है। ''आज की बालिका ही आगामी दशक की युवती होगी। अपने देश, समाज आदि की अतीत समृद्धि भी उसके सामने होगी और त्रुटियाँ भीं। इसके अतिरिक्त तब उसके समक्ष देश–विदेश में नारियों के इतिहास की एक विधि और विस्मृत चित्रशाला होगी।''[1] वे भविष्य की ओर संकेत करती हैं। उनका मानना है कि यदि हम बालिकाओं पर ध्यान नहीं देंगे तो भविष्य अंधकारमय है क्योंकि इस मुक्त गगन में उन्मुक्त पंक्षी की तरह उन्हें भी उड़ने का अधिकार है। उन्होंने अपनी रचना 'श्रृंखला की कड़ियाँ' में स्त्री पर हो रहे अत्याचार के विरुद्ध पुरुष पर गहरा प्रहार किया है और स्त्रियों को अपने–अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए सुगम मार्ग बताया है। उन्होंने पुरुषवादी समाज पर करारा प्रहार बताया है। युग–युग से चली आ रही नारी की दासता का वे विरोध करते हुए लिखती हैं– ''सीता पत्नी होने के कारण कष्ट सहने को बाध्य थी और राधा पत्नी न होने के कारण। तंत्र साधक अलौकिक शक्ति प्राप्त करने के लिए स्त्री को साधन बनाकर साधना करते थे और निर्गुणवादी संत उसे माया कहकर छोड़ने की साधना करते थे। कही वह देवताओं के मनोरजंन के लिए देवदासी बनी और कहीं पुरुष के मनोरंजन की सामग्री।''[2] अर्थात् स्त्रियों का शोषण किसी न किसी रूप में होता रहा है।

महादेवी स्त्री को अबला नहीं मानतीं। ''भारतीय नारी जिस दिन अपने सम्पूर्ण प्राण प्रवेग से जाग सके उस दिन उसकी गति रोकना किसी के लिए संभव नहीं।''[3] वे स्त्रियों को जगाना चाहती हैं, जागरुक करना चाहती हैं, किन्तु उनकी जागृति में निर्माण है, ध्वंस नहीं है। वे तो सृजन चाहती हैं और सृजन से ही नया रास्ता खोजना चाहती हैं। अन्याय का विरोध करते हुए कहती हैं– ''अन्याय के प्रति मैं स्वभाव से असहिष्णु हूँ अतः इन निबन्धों में उग्रता की गंध स्वाभाविक है, परन्तु ध्वंस के लिए ध्वंस के सिद्धान्त में मेरा विश्वास कभी नहीं रहा। मैं तो सृजन के उन प्रकाश तत्वों के प्रति निष्ठावान् हूँ जिनकी उपस्थिति में विकृति अन्धकार के समान विलीन हो जाती है।..... वास्तव में अंधकार स्वयं कुछ न होकर आलोक का अभाव है इसी से तो छोटा से छोटा दीपक भी उसकी सघनता को नष्ट कर देने में समर्थ है।''[4] जिस प्रकार एक छोटा से दीपक घनघोर अन्धकार में भी रोशनी बिखेर देता है, उसी प्रकार स्त्रियों को इस समाज के बन्धन रूपी अन्धकार में दीपक की तरह प्रकाश कर उस बन्धन को समाप्त कर देना चाहिए। वे स्त्रियों के ऊपर हो रहे अत्याचार का विरोध करती हैं और उसे समाप्त करना चाहती हैं। उनकी समस्याओं का निदान ढूंढना चाहती हैं, ''महादेवी प्राचीन मध्ययुग एवं आधुनिक युग में चले आ रहे जीवन के समस्या जाल को सुलझाने के लिए नारी पर जन्म से लेकर मृत्यु तक किये जाने वाले अत्याचारों की समाप्ति अनिवार्य है। पुरुष समाज को भी इस सत्य से इन्कार नहीं हो सकती।''[5]

महादेवी का मानना है कि पुरुष की भांति स्त्री भी समाज का अंग है और इस बात को पुरुषों को भी समझना होगा। दोनों को सहयोगी बनाकर चलना होगा। वे स्त्रियों को अपना स्थान दिलाना चाहती हैं– ''हमें न किसी पर जय चाहिए, न किसी से पराजय, न किसी पर प्रभुत्व चाहिए, न किसी का प्रभुत्व। केवल वह अपना स्थान वे स्वत्व चाहिए जिनका पुरुषों के निकट कोई उपयोग नहीं, परन्तु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग बन न सकेंगी।''[6] उनका मानना है कि स्त्री को अपना स्थान पाना है तो उसे शिक्षित होना होगा। शिक्षा ही वह लौ है जो उसके जीवन को प्रकाषित कर सकती है। शिक्षा व्यक्ति की संकीर्णताओं को समाप्त करने में सहायक होती है– ''यदि उनके जन्म के साथ विवाह की चिन्ता न

कर उनके विकास के साधनों की चिन्ता की जाय उनके लिए रुचि के अनुसार कला, उद्योग–धन्धे तथा शिक्षा के द्वार खुले हों, जो उन्हें स्वावलम्बी बना सके, और तब अपनी शक्ति और इच्छा को समझकर यदि वे जीवनसंगी चुनें तो विवाह उनके लिए तीर्थ होगा जहां वे अपनी संकीर्णता मिटा सकेंगी। व्यक्तिगत स्वार्थ को बहा सकेगी और उनका जीवन उज्ज्वल से उज्ज्वल हो सकेगा।''[7]

महादेवी वर्मा छायावाद के चार स्तम्भों में से एक हैं। जिस समय जयशंकर प्रसाद नारी को श्रद्धा के रूप में देख रहे थे–

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।
पियूष श्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।।

उसी समय सुमित्रा नन्दन पंत नारी को मुक्त करने का आह्वान कर रहे थे–

मुक्त करो नारी को मानव चिर वन्दिनी नारी को।
युग–युग की बर्बरता से जननी, सखी प्यारी को।।

उसी छायावादी काल में महादेवी स्त्रियों की स्थिति को स्पष्ट करती हुई उनकी वेदना को दर्शाते हुए लिखती हैं–

''विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना।
परिचय इतना इतिहास यही,
उमड़ी कल थी, मिट आज चली।।[8]

जिस प्रकार बदली विस्तृत आकाश में रहते हुए भी कहीं थी अपना स्थान नहीं बना पाती और उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है उसी प्रकार इस समाज में स्त्रियों की स्थिति है। महादेवी वर्मा की दृष्टि से स्त्रियों को सशक्त बनाने के लिए आवाज बुलंद की। उन्होंने अपनी कविताओं में प्रतीकों के माध्यम से स्त्री को सशक्त करने का प्रयास किया। डॉ0 रामविलास शर्मा ने लिखा है– ''महादेवी जी अपने गीतों में 'देवी' के रूप में नहीं एक 'मानवी' के रूप में दर्शन देती हैं। उनका नारीत्व सामाजिक सीमाओं के अन्दर विकास के लिए पंख फड़फड़ाता है। उनकी यह व्याकुलता अनेक सांकेतिक रूपों में उनकी कविताओं में प्रकट होती है।''[9] महादेवी मनुष्य के रूप में स्त्री को भी स्थान दिलाना चाहती हैं।

इस प्रकार महादेवी के सम्पूर्ण साहित्य में स्त्री–संघर्ष दिखाई देता है। एक ओर जहां गद्य साहित्य में मुखर एवं स्पष्ट है वहीं उनके गीतों में प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त हुआ है। उनका मानना है कि स्त्री और पुरुष दोनों ही समाज के अंग हैं। अतः स्त्री को भी पुरुषों के समतुल्य स्थान मिलना चाहिए। वे स्त्रियों को उनका अधिकार दिलाने के लिए आजीवन प्रयत्नशील रहीं। महादेवी मानती हैं कि बिना संघर्ष किए स्त्रियों को उनका अधिकार नहीं प्राप्त हो सकता किन्तु यह संघर्ष निर्माण के लिए हो ध्वंस के लिए नहीं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. महादेवी वर्मा– मेरे प्रिय सम्भाषण, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद (2008), पृ0सं0–67।
2. महादेवी वर्मा– नये दशक में महिलाओं का स्थान, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार (1985), पृ0सं0–9।
3. महादेवी वर्मा– श्रृंखला की कड़ियाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद (2011), पृ0सं0–9।
4. महादेवी वर्मा– श्रृंखला की कड़ियाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद (2011), पृ0सं0–9।
5. डॉ0 वीरेन्द्र बडसूवाला– गद्यकार महादेवी वर्मा, राजकमल प्रकाशन, नईदिल्ली–1998।
6. महादेवी वर्मा– श्रृंखला की कड़ियाँ, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2011।
7. महादेवी वर्मा– श्रृंखला की कड़ियाँ, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2011।
8. महादेवी वर्मा– संध्यगीत, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013।
9. डॉ0 रामविलास शर्मा– सम्पादक परमानन्द श्रीवास्तव– महादेवी वर्मा की आलोचना साहित्य की समस्याएँ, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद–2005, पु0सं0–177।